The Statesman

29th May 2017

India's cheap labour a myth: Assocham

STATESMAN NEWS SERVICE
NEW DELHI, 28 MAY

It is a "myth" that India's labour is cheap and there is a need for lowering interest rates and logistics cost to make the domestic industry competitive, Assocham president Sandeep Jajodia has said. He said poor infrastructure, "extremely high" cost of power in addition to high interest rates are eroding the competitiveness of Indian industry.

"We talk about cheap labour. I don't think that is true. I don't think we have cheap labour because the productivity of our labour is so low that where you require one person to do a job abroad, you probably have many people to do the same job.

"I don't think India has any advantage. In fact, it has a lot of disadvantages in terms of the ease of doing business, in terms of interest rates, infrastructure is a very big problem. Our infrastructure cost, our logistics cost is many times of what my competitor faces," Mr Jajodia said.

The Assocham president said there was a need to clean up the balance sheets of banks and reduce the non-performing assets (NPAs) for credit offtake to pick up.

He said the interest rates need to come down significantly and hoped the RBI will act in that direction.

The Asian Age

29th May 2017

"I don't think we have cheap labour. Productivity of our labour is so low, you probably have many

— S. Jajodia,
President, Assocham

Business Standard

29th May 2017

India's cheap labour a 'myth', says Assocham president

It is a 'myth' that India's labour is cheap and there is a need for lowering interest rates and logistics costs to make the domestic industry competitive, Assocham President Sandeep Jajodia has said. He said poor infrastructure, "extremely high" cost of power in addition to high interest rates are eroding the competitiveness of Indian industry. "We talk about cheap labour. I don't think that is true. I don't think we have cheap labour because the productivity of our labour is so low that where you require one person to do a job abroad, you probably have many people to do the same job," Jajodia said. PTI

Millennium Post

29th May 2017

India's cheap labour a myth: Assocham prez

NEW DELHI: It is a 'myth' that India's labour is cheap and there is a need for lowering interest rates and logistics cost to make the domestic industry competitive, Assocham president Sandeep Jajodia has said.

He said poor infrastructure, "extremely high" cost of power in addition to high interest rates are eroding the competitiveness of Indian industry.

"We talk about cheap labour. I don't think that is true. I don't think we have cheap labour because the productivity of our labour is so low that where you require one person to do a job abroad, you probably have many people to do the same job.

"I don't think India has any advantage. In fact, it has a lot of disadvantages in terms of the ease of doing business, in terms of interest rates, infrastructure is a very big problem. Our infrastructure cost, our logistics cost is many times of what my competitor faces," Jajodia said. The Assocham president said there was a need to clean up the balance sheets of banks and reduce the non-performing assets (NPAs) for credit offtake to pick up. PTI

Deccan Chronicle

29th May 2017

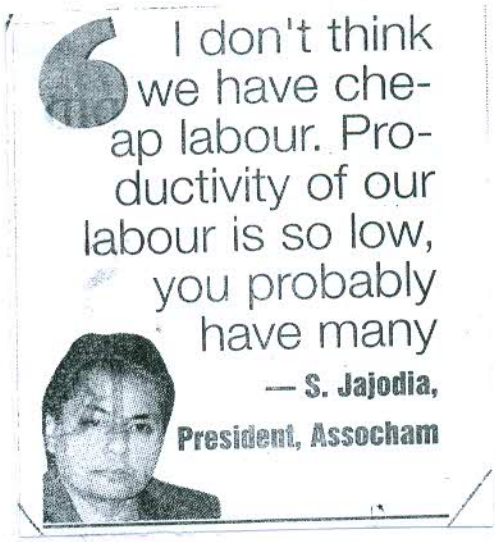

Dainik Bhaskar

29th May 2017

बेरोजगारी से ज्यादा गंभीर समस्या है कम रोजगारी : नीति आयोग

- एक आदमी का काम कई लोग मिलकर कर रहे हैं, इससे कम रह गई है उत्पादकता
- आयोग ने ज्यादा प्रोडक्टिविटी और वेतन वाली नौकरियां सृजित करने की सिफारिश की

एजेंसी | नई दिल्ली

देश में बेरोजगारी से ज्यादा गंभीर समस्या है कम रोजगारी। एक आदमी जितना काम कर सकता है, उस काम को दो या उससे ज्यादा लोग कर रहे हैं। यह कहना है सरकार के थिंक टैंक नीति आयोग का। इसने एक उदाहरण देते हुए बताया है कि सर्विसेज कंपनियों के 98 फीसदी कर्मचारियों का सेक्टर के कुल आउटपुट में सिर्फ 62 फीसदी योगदान है। आयोग की यह टिप्पणी ऐसे समय आई है जब कम नौकरियां पैदा होने के कारण विपक्षी दल केंद्र सरकार की आलोचना कर रहे हैं।

आयोग के तीन साल के एजेंडा रिपोर्ट में ज्यादा उत्पादकता और अधिक वेतन वाली नौकरियां सृजित करने पर जोर है। यह रिपोर्ट 2017-18 से 2019-20 के लिए है। आयोग की गवर्निंग काउंसिल को यह ड्राफ्ट रिपोर्ट पिछले महीने वितरित की गई। काउंसिल में सभी राज्यों के मुख्यमंत्री हैं।

आयोग का कहना है कि चीन में कामकाजी लोगों की उम्र ज्यादा है, भारत की कम। इसलिए वहां की बड़ी कंपनियों को यहां बुलाना चाहिए। चीन, सिंगापुर, ताइवान, दक्षिण कोरिया का अनुभव बताता है कि मैन्युफैक्चरिंग और ग्लोबल प्रतिस्पर्धा से ही अच्छे वेतन वाली नौकरियां मिलती हैं।

भारत में श्रम सस्ता होने की बात सही नहीं : एसोचैम

उद्योग चैंबर एसोचैम के अनुसार यह कहना गलत है कि भारत में श्रम सस्ता है। चैंबर के प्रेसिडेंट संदीप जाजोदिया ने कहा, हमारे यहां श्रमिकों की उत्पादकता बहुत कम है। दूसरे देशों में जो काम एक आदमी करता है, उसे यहां कई लोग मिलकर करते हैं। बिजली और कर्ज भी बहुत महंगा है, इन्फ्रास्ट्रक्चर और लॉजिस्टिक्स की लागत भी अधिक है जिससे घरेलू इंडस्ट्री प्रतिस्पर्धी नहीं रह जाती।

उत्पादकता में छोटी कंपनियां पीछे

- 2011-12 के एनएसएसओ सर्वे के अनुसार 49% लोग कृषि क्षेत्र में काम कर रहे थे, लेकिन इस सेक्टर का जीडीपी में योगदान सिर्फ 17% था।
- 2010-11 में मैन्युफैक्चरिंग में 72% लोग उन फर्मों में थे जिनमें 20 से कम कर्मचारी हैं। मैन्युफैक्चरिंग आउटपुट में इनका योगदान सिर्फ 12% था।
- 2006-07 का सर्विसेज कंपनियों का सर्वे बताता है कि 650 बड़ी कंपनियों का आउटपुट में योगदान 38% था, जबकि इनमें सेक्टर के सिर्फ 2% लोग थे।

जितनी आईटी नौकरियां जाएंगी, उससे ज्यादा मिलेंगी : कोटक

कोटक इंस्टूट्यूशनल इक्विटीज ने एक रिसर्च नोट में लिखा है कि आईटी कंपनियों में नौकरियां जाने के बावूजद यह सेक्टर जॉब के लिहाज से अच्छा रहेगा। इन कंपनियों में जितनी नौकरियां जाएंगी, उससे ज्यादा लोगों को मिलेंगी। हालांकि ऑटोमेशन का असर भी देखना होगा। हर बार आईटी कंपनियों में सालाना अप्रेजल के बाद 1-3% लोग हटाए जाते हैं। इस बार यह आंकड़ा 2-4% रह सकता है। इसके मुताबिक इंजीनियरिंग और आरएंडडी में जॉब की संख्या 7-9% और घरेलू आईटी-बीपीओ सेगमेंट में 5-7% बढ़ने की उम्मीद है।

Navodaya Times

29th May 2017

भारत का 'सस्ता श्रम' एक भ्रांति है : एसोचैम अध्यक्ष

नई दिल्ली, 28 मई (एजेंसी): उद्योग मंडल एसोचैम के अध्यक्ष संदीप जजोदिया का कहना है कि भारत का सस्ता श्रम एक 'भ्रांति' है और इसलिए घरेलू उद्योग जगत को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए ब्याज दरों को कम करने और लॉजिस्टिक लागत को घटाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि खराब बुनियादी ढांचा, बिजली की 'अत्यधिक उच्च लागत' के बाद ऊंची ब्याज दरें भारतीय उद्योग की प्रतिस्पर्धा को खत्म कर देती हैं।

उन्होंने कहा, ''मुझे नहीं लगता कि भारत किसी लाभ की स्थिति में है बल्कि कारोबार सुगमता के मामले में यहां कई कठिनाइयां हैं जिसमें ब्याज दर, बुनियादी ढांचा बड़ी समस्याएं हैं। हमारी अवसंरचना की लागत, हमारी लॉजिस्टिक लागत हमारे प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले कई गुना ज्यादा है।''

Naya India

29th May 2017

भारत का 'सस्ता श्रम' एक भ्रांति है

नई दिल्ली, भाषा। उद्योग मंडल एसोचैम के अध्यक्ष संदीप जजोदिया का कहना है कि भारत का सस्ता श्रम एक 'भ्रांति' है और इसलिए घरेलू उद्योग जगत को प्रतिस्पर्धी बनाए रखने के लिए ब्याज दरों को कम करने और लॉजिस्टिक लागत को घटाए जाने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि खराब बुनियादी ढांचा, बिजली की 'अत्याधिक उच्च लागत' के बाद उंची ब्याज दरें भारतीय उद्योग की प्रतिस्पर्धा को खत्म कर देती हैं। जजोदिया ने कहा, हम सस्ते श्रम की बात करते हैं। मुझे नहीं लगता यह सत्य है। मुझे नहीं लगता कि हमारे पास सस्ता श्रम है क्योंकि हमारे श्रम की उत्पादकता बहुत कम है। विदेशों में किसी काम के लिए जहां एक आदमी की जरूरत होती है वहीं हमारे यहां उसी काम को शायद कई लोग करते हैं। उन्होंने कहा, मुझे नहीं लगता कि भारत किसी लाभ की स्थिति में है। बल्कि कारोबार सुगमता के मामले में यहां कई कठिनाइयां हैं जिसमें ब्याज दर, बुनियादी ढांचा बड़ी समस्याएं हैं। हमारी अवसंरचना की लागत, हमारी लॉजिस्टिक लागत हमारे प्रतिस्पर्धियों के मुकाबले कई गुना ज्यादा है। जजोदिया ने कहा कि बैंकों के बैलेंस शीट को ठीक किए जाने और गैर-निष्पादित आस्तियों के बोझ को कम करने की जरूरत है ताकि रिण गतिविधियों को बढ़ाया जा सके। उन्होंने कहा कि ब्याज दरों को तेजी से कम किया जाना चाहिए और उन्हें उम्मीद है कि भारतीय रिजर्व बैंक इस दिशा में काम करेगा।